उपसंहार

अमृतलाल नागर हिंदी उपन्यास जगत के प्रमुख आधारस्तंभ है । साहित्य की दृष्टि से उनका समग्र साहित्य-संसार बीसवीं सदी की अमूल्य निधि है । नागर के उपन्यास संसार पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि दार्शनिक और वैचारिक दृष्टि से भी उनकी रचनाएँ अनुपम और अद्‌भूत है । उन्होंने श्रम और अध्ययन के द्‌वारा देश-विदेश के प्राचीन तथा आधुनिक , आध्यात्मिक , ऐतिहासिक ग्रंथों को मथकर कथानक रूपी नवनीत प्राप्त किया है । युगीन परिस्थितियों का प्रभाव उनके साहित्य पर पड़ा है । उनके उपन्यासों में विषय वैविध्य दिखाई देता है । ऐसे श्रेष्ठ प्रतिभाशाली उपन्यासकार का प्रसिध्द उपन्यास 'सुहाग के नूपुर' में चित्रित समाज और नारी पात्र की दृष्टि से उपन्यास की समीक्षा करना मेरे लिए एक चुनौती सी बनी । मैंने इस चनौती का स्वीकार कर 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास का समाज जीवन और नारी जीवन स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

अमृतलाल नागर बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । इस शोधकार्य का प्रथम अध्याय नागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जुडा हुआ है । अच्छे-भले , खाते-पिते नागर परिवार में उनका जन्म हुआ । पिता की मृत्यू (आत्महत्या) के कारण छोटी उम्र में ही पूरे परिवार की जिम्मेदारी उनपर पडी । आर्थिक समस्या को हल करने के लिए वे नौकरी करने लगे । वे नौकरी करते समय मानसिक संघर्ष में पीस जाते थे । अतः नौकरी छोड़कर स्वतंत्र लेखन कार्य में जुट गए । नागर का जीवन अश्रमयी घटनाओं से भर पड़ा है । जिसे उन्होंने धीरता , साहस और दायित्वपूर्ण रूप से सँभाला हैं । उनकी कर्मठता , परिश्रम तथा उदारता के कारण नागर का प्रकाश साहित्य जगत में फैलता रहा । उनकी पत्नी अपने नाम के अनुसार प्रतिभा बनकर उनकी जिंदगी में आयी और लेखन कार्य में उन्हें सहयोग देती रही । उनकी कला का प्रभाव उनके बेटे और बेटियों पर पडा है । पत्नी तथा भाईयों की मृत्यु से उनपर वज्राघात हुआ । लेकिन वे लेखन कार्य से जुदा नहीं हुए । 23 फरवरी , 1990 ई. के दिन यह जाज्वल्यमय , उज्ज्वल नक्षत्र अपनी अंतिम प्रभा बिखरे हमेशा के लिए अस्त हो गया । भौतिक शरीर न रहने पर भी अपनी अद्‌भूत एवं मौलिक कृतियों के रूप में वे सदैव अक्षय अमर रहेंगें ।

अध्ययन की सुविधा के लिए इस शोध कार्य को चार अध्यायों में विभाजित किया गया हैं-

प्रथम अध्याय में नागर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय का विवेचन किया हैं । नागर का व्यक्तित्व आकर्षक एवं चिंतनशील था । वे स्वभाव से उदार एवं गंभीर थे । संयत , शालीन और मितभाषी होते हुए भी वे हास-परिहास में आनंद लिया करते थे । जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में वे समरस होकर जीना जानते थे । उन्हें सादगीयुक्त जीवन जीना काफी पसंद था । वे खद्‌दर का

कुर्ता , पजामा पहनते थे । नियमित रूप से पाठ-पूजा करते थे ।अनेक भाषाओं तथा साहित्य में उनकी गहरी रूचि थी । वे साहित्यिक दलबदियों से बहुत ऊपर उठे हुए थे । जिस तरह चंदन खुद घिस-घिसकर सुगंध देता है , उसी तरह नागर का व्यक्तित्व खुद घिसकर औरों को सुगंधित करता रहेगा । उनका व्यक्तित्व एवमं कृतित्व निराश व्यक्ति के लिए जीवन में उत्साह और साहित्य मर्मज्ञ के लिए आनंद की अद्‌भूत सृष्टि करनेवाला हैं । इससे स्पष्ट है कि, सबसे बढ़कर वह एक महान मानव थे ।

नागर के कृतित्व का परिचय देकर उनके उपन्यासों का विषयगत विवेचन किया गया है । सबसे पहले लिखा 'महाकाल' इस उपन्यास में नागर ने 1943 के बंगाल के अकाल का यथार्थ चित्रण किया है । 'सेठ बाँकेमल' हास्यव्यंग्य प्रधान उपन्यास है । हास्यव्यंग्य और अतिशयोक्ति के माध्यम से नागर ने हँसते-हँसते जीवन जीने की कला पाठकों को सिखाई है । ''बूँद और समुद्र' विशाल फलक पर आधारित लिखा गया उपन्यास है । 'शतरंज के मोहरे' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित नवाबों की भोगविलासिता , अन्याय-अत्याचार , हिंदू-मुस्लिम रूढ़ियों को चित्रित करनेवाला उपन्यास है । 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में कुलवधु , नगरवधु संघर्ष दिखाकर कुलवधु कन्नगी को एक दिव्य नारी के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है । 'अमृत और विष' उपन्यासद्‌वारा नागर ने अंधःकार से प्रकाशमय जीवन की ओर बढ़ने के लिए कार्यरत रहने की प्रेरणा दी है । यह प्रतिकात्मक उपन्यास है । 'सात घुँघटवाला मुखड़ा' ऐतिहासिकता पर आधारित काल्पनिक मनोरंजक उपन्यास है । 'एकदा नैमिषारण्ये' यह पौराणिक संस्कृत-निष्ठ भाषा में लिखा गया उपन्यास है । 'वसुधैव कुटूंबकम्' की भावना को प्रस्थापित करना इसका मूल उद्‌देश्य है । 'मानस का हंस' उपन्यास में तुलसीदास के जीवन को इतिहास की परिधि में बाँधकर आधुनिकता से पेश किया गया है । ''नाच्यौ बहुत गोपाल'' इस उपन्यास में नागर ने समाज के निम्न वर्ग मेहतर को आधार बनाकर उपन्यास की रचना की है । इसमें छूत-अछूत की समस्या , सवर्णोद्‌वारा उनपर किए जानेवाले अत्याचार को प्रस्तुत किया है । 'खंजन नयन' उपन्यास में सूरदास के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है । इस उपन्यास की सार्थकता इसी में है कि, जिस व्यक्ति को विधाता ने तन की आँखें नहीं दी, उसे मन की आँखें देकर दिव्यदृष्टि संपन्न बना दिया है । 'बिखरे-तिनके' इस उपन्यास में समाज तथा राजनीति की बिखरी हुई घटनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है । 'अग्निगर्भा' उपन्यास में दहेज समस्या पर प्रकाश डाला गया है ।

इस प्रकार नागर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अनेक ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डाला है । नागर पुरातन और नूतन का समन्वय करनेवाले कर्मठ एवं कृतिशील कलाकार थे । उनके

व्यक्तित्व एवं कृतित्व में परंपरा और आधुनिकता का जीवंत समन्वय , मानव मात्र को प्रेरणा देनेवाली व्यापक राष्ट्रीयता और अखंड कर्म करने की प्रेरणा का अमूल्य संदेश प्राप्त होता है ।

द्वितीय अध्याय में नागर के महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'सुहाग के नूपुर' की विषय-वस्तु को विषद किया गया है । इस अध्याय में 'सुहाग के नूपुर' की कथागत विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । मानव मन की गहन अनुभूतियों को नागर ने अपनी अलौकिक प्रतिभा और तीव्र अनुभूतियों के माध्यम से ऐसा सुंदर प्रतिपादन किया है कि प्रत्येक पक्ष का समग्र चित्रण सामने उभरकर आता है । इस उपन्यास की विशेषता यह है कि, नागर ने ऐतिहासिक कथानक को गहरे सामाजिक आशय से सम्पृक्त करके प्रस्तुत किया है । उपन्यास नारी समस्या से संबंधित होने के कारण युगों से पीडित नारी की व्यथा को व्यक्त करता है । लेखक ने नारी शोषण की शाश्वत समस्या को इतिहास से खोज निकालना चाहा है ।

'सुहाग के नूपुर' यह उपन्यास तमिल महाकाव्य 'शिलप्पादिकारम्' पर आधारित है । नागर ने प्रेम त्रिकोण के माध्यम से इस वास्तविकता पर प्रकाश डाला है कि, वेश्यागामी पुरुष न तो पत्नी को सुखी बना सकता है और न ही वेश्या को पत्नी के रूप में स्वीकार कर उसे खुश रख सकता है । कोवलन-कन्नगी और वेश्या माधवी इन प्रमुख पात्रों के बीच मुख्य कथा का ताना-बाना बुना है । गौण कथा में पेरियनयकी , पान्सा , चेलम्मा , राजपुरुष, मासात्तुवान, मानाइहन आदि पात्रों की कथा से कथानक रोचक बन पड़ा है ।

कावेरीपट्टणम् के दो अतुल धनाधीशों की इकलौती संतान कोवलन और कन्नगी का विवाह तय होता है । लेकिन विवाह से पूर्व ही कोवलन 'नृत्योत्सव' में वेश्या माधवी के प्रेमपाश में बँध जाता है । वेश्या होकर भी माधवी एकपुरुषव्रत साधकर कोवलन की पत्नी बनने के लिए ललायित है । लेकिन कोवलन सामाजिक प्रतिष्ठा तथा धनलोभ के कारण कन्नगी से विवाह करता है । विवाह के बाद भी माधवी से प्रेमसंबंध रखकर उसी के साथ रहता है । जिससे उन्हें एक पुत्री होती है - मणिमेखला । माधवी अपने बेटी पर कुलीनों के संस्कार करना चाहती है और खुद कुलवधु के अधिकार पाना चाहती है । सुहाग के नुपूर पाने के लिए माधवी जीवन भर तड़पती है । विविध बहाने बनाकर तथा छल-कपटकर सती का सम्मान पाना चाहती है । माधवी लाख कोशिश करने पर भी सुहाग के नूपुर हासिल नहीं कर पाती, तब वह विद्रोहिनी बन जाती है । कोवलन से ईर्ष्यावश राजपुरुष से संबंध बढाती है, जो उसे वेश्या बनाकर ही दम लेता है । उपन्यास में यथार्थवादी दृष्टिकोन होने के कारण कथा ऐतिहासिक होकर भी आधुनिक स्थिति से मेल खाती है ।

कोवलन की पत्नी कन्नगी को अपनी सुहागरात पर ही पता चलता है कि, पति वेश्यागामी है । फिर भी वह कोवलन तथा माधवी से ईर्ष्या नहीं करती, अपने मुँह से उफ् तक नहीं निकालती । शांत, संयमित भाव से पति को परमेश्वर मान उसके सारे कुकर्मों पर पर्दा डालती है । माधवी कोवलन की हवेली में आकर उसके साथ सात भाँवरे लेती है तब भी कन्नगी चुपचाप रहती है । माधवी कन्नगी के सारे अधिकार छीनकर चाबियाँ हासिल करती है लेकिन कन्नगी के सुहाग के नूपुर देने से साफ इन्कार करती है । कोवलन उसे मारकर घर से बाहर निकालता है, तब वह पिता के घर न जाकर श्वसुरकुल की लाज रखकर धर्मशाला में जाकर रहती है । माधवी सुहाग के नूपुर न मिलने से कोवलन को धक्के मारकर घर से निकालती है । राजपुरुष से संबंध बढ़ाकर वह कोवलन को पिटवाती है । बेसुध कोवलन को चेलम्मा धर्मशाला में कन्नगी के पास लाती है । तो कन्नगी सब भूलकर उसकी सेवा करती है । नया व्यापार शुरू करने के उद्देश्य से कोवलन नूपुर बेचने जाता है, तब उसपर चोरी का इल्जाम लगाकर प्राणदंड देने की घोषणा की जाती है । तब कन्नगी अपने पति-परमेश्वर को निर्दोष सिध्द कर प्राणदान दिलवाती है ।

चेलम्मा, पेरियनायकी को वेश्या अम्माओं के रूप में चित्रित किया है । रूद्रम्माल और ललिताद्वारा देवदासी प्रथा पर प्रकाश डाला गया है । पापनाशन, महालिंगम, राजपुरुष महादंडाधिकारी, पान्सा आदि चरित्रोंद्वारा सेठ, साहुकार और महजनी सभ्यता की विलासप्रियता का पर्दाफाश किया गया है । पान्सा राज्याधिकारियों को रिश्वत देकर अपनी ओर खींचता है, मनमाने राजनीतिक दाँवपेंच खेलता है, इससे नगर की भ्रष्ट शासनव्यवस्था के दर्शन होते है । मणिमेखला के रूप में भयग्रस्त छोटी बच्ची के दर्शन होते है । देवंती और नागरत्ना को ईमानदार दासियों के रूप में चित्रित किया गया है । सेठ मासात्तुवान और मानाइहन इन दो धनी सेठों का चरित्र आदर्श दिखाया गया है । इनके अलावा विदेशी व्यापारियों का चित्रण गौण रूप में किया गया है ।

नागर ने इस उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि, प्रत्येक व्यक्ति कर्मों की ओर उन्मुख होता है । दैनिक जीवन में चिंता, आशा, काम, वासना, ईर्ष्या आदि मनोभावों को आत्मसात करता है । प्रवृत्ति मार्ग को अपनाते हुए व्यक्ति सत्कर्मों की अपेक्षा दुष्कर्मों की ओर उन्मुख होता है । नागर ने अंत में पुरानमतवादी, रूढ़िग्रस्त तत्व को अपनाकर यह दिखाया है कि लोगों के दुष्कर्मों के फलस्वरूप, नैसर्गिक आपत्ति के कारण पूरा नगर ध्वस्त होता है ।

'सुहाग के नूपुर' अमृतलाल नागर की ऐसी प्रतिनिधि रचना है, जिसमें भावों, विचारों एवं रसों का अद्भूत निरुपण हुआ है, तथा यह उपन्यास अपने रचना कौशल्य के कारण आधुनिक युग की युगांतकारी कृति मानी गयी है । विश्व के सभी उपन्यास युग-युग की संचित भावराशि के अथाह

भंडार होते है, क्योंकि उनमें कुछ शाश्वत तत्व होते है, जिनका पाठक भावन करता है । ऐसे उपन्यासों में मानव जीवन के शाश्वत तत्वों का उद्‌घाटन, सत्-असत् प्रवृत्तियों का संघर्ष, आंतर-बाह्य प्रकृति का सुंदर सामंजस्य, लोकहित और लोकानुरंजन की प्रवृत्ति तथा महान उद्‌देश्य आदि अनेक तत्वोंपर विस्तार से विचार किया है । वेश्या समस्या का विस्तृत वर्णन कर उसकी भयंकरता का मार्मिक प्रदर्शन ही इस उपन्यास का प्रधान उद्‌देश्य है । संक्षेप में हम कह सकते है कि, नागर की भाषा प्रौढ़ एवं प्रवाहमयी है । भाषा की सरलता के साथ भावों की उच्चता ने उपन्यास को प्रभावोत्पादक बना दिया है । नागर ने प्रकृति का सुंदर वर्णन किया है । अपनी मौलिक उद्‌भावनाओं का अवलंबन कर उपन्यासकार ने मानव मात्र को अच्छे कर्मो की ओर बढ़ने का उपदेश दिया है । प्रस्तुत उपन्यास के सफल अंकन में नागर सिध्दहस्त हुए है ।

<u>तृतीय अध्याय</u> में नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित समाज जीवन की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है । विवेच्य उपन्यास में भारतीय समाज का सर्वांगीण चित्रण हुआ है । रीति-रिवाज, प्रथा-परम्पराएँ, उत्सव, पर्व, ब्राह्मण पूजा, विवाहोत्सव, नृत्योत्सव, अतिथियों का आदर आदि भारतीय संस्कृति का पूर्ण रुपेन चित्रण हुआ है । भारतीय संस्कृति पुरुषप्रधान है और पुरुषप्रधान संस्कृति होने के कारण स्त्रियों को कितनी यातनाएँ सहनी पड़ती है उसे नागर ने यथार्थ रूप में चित्रित किया है । शोषिता सुहागन के रूप में कन्नगी को दिखाकर सदियों से पीडित सतियों की प्रताड़ना का रेखांकन हुआ है । तथा भारतीय आदर्श नारी के दिव्य रूप को कन्नगीद्‌वारा दिखाया है । तो दूसरी ओर वेश्या प्रथा, देवदासी प्रथा का चित्रण कर समाज के तिरस्कृत अंग को चित्रित किया है । वेश्या खुले रूप से पुरुषों के साथ यौनसंबंध बढ़ाती है, तो देवदासी धर्म की आड में मंदिर के पुजारियों से यौनसंबंध रखकर वेश्याओं जैसा विलासपूर्ण जीवन जीने के लिए बाध्य की जाती है, इस वास्तविकता का पर्दाफाश किया है ।

अमृतलाल नागर ने उच्च वर्ग याने सेठ, साहुकार, महाजन वर्ग की कुलीनता को स्पष्ट किया है , तो दूसरी ओर धन कमाने के लिए शरीर बेचनेवाली वेश्याओं को निम्मवर्ग के रूप में चित्रित किया है । मध्यवर्ग को संतुलित जीवन बिताते हुए समाज में होनेवाली घटनाओं के प्रति उदासीन दिखाया है । वेश्यावर्ग में इलंड्.गाइ, वलंड्.गाइ भेद दिखाकर कुलीना-अकुलीना भेद को दिखाया है । दत्ता, हृत्ता वर्गभेद दिखाकर देवदासियों में भी प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित वर्ग भेद का यथार्थ चित्रण किया है । महाराज कारिहर बलबन को निष्क्रिय राजा के रूप में चित्रित किया है । युद्‌धरत तथा विलासप्रिय होने से 'यथा राजा तथा प्रजा' उक्ति उनपर लागू होती है । नगर का व्यापार, अर्थनीति तथा राजनीति पर ध्यान न होने से नगर को आर्थिक हीनावस्था का सामना करना

पडता है । व्यापारिक दाँवपेंच तथा एकसत्ताधिकार प्राप्त करने की होड़ में राजनीति रसातल को जा पहुँची । मनुष्य अच्छे-बुरे वक्त में धर्म का सहारा लेता है । पूजा-अर्चना, दानधर्म, व्रत आदि दिखाकर लोगों की धार्मिक आस्था प्रकट की है । तो दूसरी ओर वेश्याओं के धार्मिक आडम्बर का पर्दाफाश किया है । धर्मपंडित, श्रावक, भिक्खु, अलवार आदि सभी को दक्षिणा की लालच में नाटक करते दिखाया है । उपन्यास में धर्म के नाम पर लड़ाई न दिखाकर 'सर्वधर्मसमभाव' को स्पष्ट किया है ।

पति-पत्नी, प्रेमिका, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्री आदि रिश्तोंद्वारा आत्मिक प्रेमसंबंध चित्रित किया है । माधवी और कन्नगी दोनों भी कोवलन से प्रेम करती है । लेकिन अंत में पतिव्रता पत्नी की जीत दिखाकर नागर ने भारतीय स्त्री तथा संस्कृति को महत्त्व देकर भारतीय सभ्यता का उत्तम एवं रंजक उदाहरण प्रस्तुत किया है । विवेच्च उपन्यास में नागर ने वेश्या के कारण पति-पत्नी के रिश्तें में दरार दिखाकर टूटते हुए परिवार का चित्रांकन किया है । उपन्यास के कई पात्रों के माध्यम से नागर ने उच्चकुलीन शीलभ्रष्ट व्यक्तियों का चित्रण कर उच्चवर्गीय सभ्यता का पर्दाफाश किया है । उच्च वर्गीयों की हवस का शिकार बनी वेश्याओं को अनेक लोगों से अंग-संग के कारण उन्हें कई बिमारियों का सामना करना पड़ता है । वेश्या चेलम्मा का श्वेतकुष्ठ से रोगग्रस्त होना इसी का प्रमाण है ।

अमृतलाल नागर का 'सुहाग के नूपुर' यह उपन्यास आधुनिक युग की ज्वलंत समस्या को अपने में समेटकर पाठकों के समक्ष उपस्थित हुआ है । इस उपन्यास का सम्यक अवलोकन करने पर ऐसा लगता है प्राचीन और नवीन का अपूर्व समन्वय हुआ है । सामाजिक जीवन का चित्रण करने में नागर सफल हुए है । सेठ, साहुकार, सांमत, ऐय्याशी करनेवाले तथा उच्चवर्ग की दांभिकता पर करारा व्यंग्य किया गया है । छोटी-छोटी बच्चियों को खरीदकर वेश्या के लिए आवश्यक सभी कलाओं में पारंगत करने की वृत्ति पर नागर ने तीखा प्रहार किया है । नागर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों की झाँकियाँ चित्रित करने में सफल हुए हैं ।

<u>चतुर्थ अध्याय</u> में 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन का विस्तार से विवेचन करने का प्रयास किया गया है -

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यह कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ।"

नारी का रूप प्रकृति सा - सम्मोहन रूप है । समाज में नारी के अक्षुण्ण महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता । समाज के निर्माण और विकास में नारी का सहयोग महत्त्वपूर्ण है । पुरुष और स्त्री दोनों एक ही जीवन के दो विभिन्न आकृतिमूलक पहलू है । नारी का कार्य नवनिर्माण करना, गृहस्थ जीवन को संचलित करना, पुरुष की शक्ति तथा प्रेरणा बन सारे विश्वपर प्रेम उंडेलना है । नारी कई रूपों में अपनी जिम्मेदारियाँ निभाती है - कन्या, पत्नी, प्रेमिका, माँ, फूफी, चाची, मौसी, दादी, नानी आदि कई रूपों में वह कार्यरत रहती है । इसके अलावा भी परिवारेतर रूपों में वह दासी, प्रेमिका, कलंकिता, वेश्या आदि रूपों में दिखाई देती है । भारतीय संस्कृति में नारी के पत्नी रूप को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है । नारी को इस रूप में एक तरह का गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है । पत्नीरूप जीवन के त्याग, श्रध्दा, बलिदान, सहिष्णुता आदि गुणों की नींव पर ही भारतीय कुटूंबव्यवस्था की स्थिरता का भवन अब तक खड़ा है । प्रेम मनुष्य के जीवन की अमूल्य निधि है । परित्यक्ता नारी की स्थिति समाज में बडी करुणाजनक होती है ।

कुछ नारियाँ ऐसी होती हैं जिनसे बँधकर पुरुष अपने कर्म, अपनी जीवन-गति और अपने आपको पाता है, पर कुछ ऐसी भी स्त्रियाँ होती हैं जिनसे वह मात्र इच्छा-विलास के लिए बँधता है और खोजने पर भी अपने आपको नहीं पाता । कुलवधु कन्नगी और नगरवधु माधवी इस उपन्यास के दो ऐसे ही नारी चरित्र है - इन दोनों के बीच है अपनी उद्दाम भोगेच्छा और छलना से ग्रसित धनकुबेर कोवलन । साथ ही देहार्पण के बावजूद मुक्तावस्था को प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाली चेलम्मा जैसी अविस्मरणीय नारी भी है । खासकर इन्हीं चार चरित्रों के माध्यम से यह महत्त्वपूर्ण उपन्यास दक्षिण के परमप्रतापी चोल महाराजाओं की राजव्यवस्था और उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का साक्षात्कार करता है । मानव-जीवन के पारस्पारिक अंतःसंघर्षों से गुजरते हुए उदात्त वृत्तियों के पक्ष-पोषण के लिए उत्प्रेरित भी करता है । यह उपन्यास प्रेम और लोक-मर्यादा के शाश्वत द्वंद्व की अविस्मरणीय गाथा है ।

विवेच्य उपन्यास में नागर ने नारी के पारिवारिक रूपों के अंतर्गत कुलीन परंपरागत पुत्रियों के रूप में कन्नगी को चित्रित किया है । विद्रोही पुत्री के रूप में माधवी और भयग्रस्त, सहमी पुत्री के रूप में मणिमेखला का चित्रांकन किया है । कन्नगी को भारतीय आदर्श नारी के रूप में दिखाकर पति को परमेश्वर मानकर, उसके सारे कुकर्मों पर पर्दा डालकर, उसे अच्छे मार्ग की ओर बढ़ने के लिए प्ररित करनेवाली पतिव्रता पत्नी के रूप में चित्रित किया है । माधवी , पेरियनायकी और चेलम्मा को वात्सल्यमयी माताओं के रूप में दिखाया है । माधवी अपनी बेटी पर वेश्या जीवन की छाया भी पड़ने नहीं देना चाहती । वह अपनी बेटी पर कुलीनों के संस्कार कर उसकी शादी

उच्चकुल में करने का सपना देखती है । उसके भविष्य के लिए हमेशा चिंतित रहनेवाली माधवी का वात्सल्यभाव प्रकट होता है । स्वार्थी और वेश्याभाव जागृत होने पर वह व्यभिचार के लिए प्रवृत्त होती है । उसे व्यभिचार करने के लिए समाज मजबूर करता है इसका यथार्थ चित्रण नागर ने किया है । परिवारेतर रूपों में देवंती और नागरत्ना दासियों की ईमानदारी पर प्रकाश डाला है । देवदासी प्रथा को चित्रित कर समाज में धर्म के नाम पर चल रहे अंधविश्वास, रूढ़ि-प्रियता तथा व्यभिचार का पर्दाफाश किया है । साथ ही धर्म के ठेकेदार धार्मिक प्रवचन, कीर्तन कर लागों को ईश्वर की ओर बढ़ने का संदेश देते है और खुद ही भोग-विलास की गर्त में गिरकर धर्म को भ्रष्ट करते है । वेश्याओं और देवदासियों की जिंदगी का चित्रण कर इन कुप्रथाओं का समाज से पूर्णरूप से जब खंडन होगा तभी सच्चे अर्थों में सामाजिक जागृति होगी इस मन्तव्य को नागर ने स्पष्ट किया है ।

'सुहाग के नूपुर' उपन्यास के माध्यम से नागर ने वेश्या समस्या को चित्रित किया है । पुरूष वेश्या को केवल उपभोग्य वस्तु के रूप में इस्तेमाल करता है, तो वेश्या अपने शरीर को बेचकर उसे उपजीविका का साधन बनाती है । किसी का आश्रय पाने के लिए हेय जीवन व्यतीत करती है । अनेक लोगों से प्रेमसंबंध रखने से उन्हें कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है । चेलम्मा के द्धारा इस समस्या को उजागर किया गया है । नाजायज संतानों की उत्पत्ति से उन संतानो को वंशपरम्परा विहिन, अधिकारों से वंचित, निराधार जीवन जीना पड़ता है । इन समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कर नागर ने कुलवधु और नगरवधु संघर्ष दिखाया है । पुरूष की दांभिकता और मूर्खता के कारण पुरूष न ही पत्नी को सुखी रख पाता है और न ही वेश्या को सुखी रख पाता है । इस वास्तविकता की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया गया है और दोनों ओर से नारी जाति की पीड़ा का चित्रांकन किया है ।

इस प्रकार 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने स्त्री के विविध रूप दिखाकर उनमें निहित विविध गुणों को सराहा भी है । नारी सुलभ गुणों से युक्त होकर भी कुलवधु बनने का अधिकार वेश्या को नहीं होता तथा समाज इसे मान्यता नहीं देता । सामाजिक बंधनों के कारण ही पुरूष कुलवधु को भी न्याय नहीं दे पाता और नगरवधु को भी न्याय नहीं दे पाता । नागर ने वेश्याओं के प्रति सहानुभूति दिखाकर पतिव्रता पत्नी तथा भारतीय आदर्श नारी कन्नगी की महिमा गाकर अंत में उसी की जीत दिखाई है । उच्च वर्गीयों की विलासी वृत्ति पर तीखा प्रहार कर बुरे कर्मो का फल बुरा ही होता है, यह कोवलन के जरिए दिखाया है । कोवलन को सही मार्ग

दिखानेवाली कन्नगी के चरित्र को ऊँची सतह पर उठाकर मार्गदर्शक या पथप्रदर्शक के रूप में उसे आलोकित किया है ।

संक्षेप में इस अध्याय में पूर्णरूप से 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में आए सभी नारी पात्रों को उनकी विशेषताओं के आधार पर समीक्षा करने का प्रयास किया गया है । साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि, आज भी मानव की प्रवृत्ति बदली नहीं है विषयवासना ही एक नारी को सामान्य नारी से वेश्या तक का सफर तय करने पर मजबूर करती है । भारतीय समाज लैंगिक जीवन में अधिक से अधिक विकृत बन गया है और उसकी हवस पूरी करने के लिए वेश्याओं ने भी विकृति का सीमोल्लंघन किया है ।

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथ

2. संदर्भ ग्रंथ

3. पत्र - पत्रिकाएँ

आधार ग्रंथ

	उपन्यासकार का नाम	उपन्यास	प्रकाशन वर्ष
1.	अमृतलाल नागर	महाकाल	भारत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. व 1947।
2.	अमृतलाल नागर	सेठ बाँकेमल	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1955 ।
3.	अमृतलाल नागर	बूँद और समुद्र	किताबमहल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. व 1956 ।
4.	अमृतलाल नागर	शतरंज के मोहरे	भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र. व. 1957 ।
5.	अमृतलाल नागर	सुहाग के नूपुर	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. व. 2008 ।
6.	अमृतलाल नागर	अमृत और विष	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. व. 1965 ।
7.	अमृतलाल नागर	सात घुँघटवाला मुखड़ा	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1968 ।
8.	अमृतलाल नागर	एकदा नैमिषारण्ये	लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद, प्र. व. 1972 ।
9.	अमृतलाल नागर	मानस का हंस	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1972 ।
10	अमृतलाल नागर	नाच्यौ बहुत गोपाल	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1980 ।
11.	अमृतलाल नागर	खंजन नयन	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1981 ।
12.	अमृतलाल नागर	बिखरे - तिनके	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1982 ।
13.	अमृतलाल नागर	अग्निगर्भा	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1983 ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

संदर्भ ग्रंथ

	उपन्यासकार का नाम	उपन्यास	प्रकाशन
1.	डॉ. सुदेश बत्रा	अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व कृतित्व एंव सिध्दांत	पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र. व 1984। और प्र. व. 1994 ।
2.	देवेंद्र चौबे	कथाकार अमृतलाल नागर	हिंदी अकादमी, दिल्ली प्रकाशन, दिल्ली, प्र. व. 1984 ।
3.	डॉ. पुष्पा बंसल	अमृतलाल नागर : भारतीय उपन्यासकार	प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, प्र. व. 1987 ।
4.	डॉ. हेमराज कौशिक	अमृतलाल नागर के उपन्यास	प्रकाशन संस्थांन, दयानंद मार्ग, नई दिल्ली, प्र. व. 1985 ।
5.	डॉ. बैजनाथ शुक्ल	भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना	प्रेम प्रकाश मंदिर, दिल्ली, प्र. व 1977 ।
6.	लज्जाराम शर्मा	आदर्श हिंदू, भाग तिसरा	मेहता इंडियन प्रेस लिमि. प्रयाग प्र. व. 1928 ।
7.	डॉ. योगेश सूरी	यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ	चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्र. व. 1994।
8.	सोती वीरेंद्र चंद्र	भारतीय संस्कृति के मूल तत्व	राजपाल एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र. व. 1998 ।
9-.	डॉ. राधा गिरधारी	राजेंद्र यादव के उपन्यासों मे व्यक्ति और समाज	चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्र. व. 1995।
10.	बाळकृष्ण गुप्त	हिंदी उपन्यास : सामाजिक संदर्भ	अभिलाषा प्रकाशन , कानपुर, प्र. व. 1978 ।
11.	प्रेमचंद	सेवासदन	हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. व. 1981 ।
12	डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर	हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	जयप्रकाश अग्रवाल, अजमेर, प्र. व. 1967 ।
13.	डॉ. सुधीरकुमार	उपन्यासकार इलाचंद जोशी - मूल्यांकन	संजय प्रकाशन, वाराणसी, प्र. व. 1980 ।
14.	डॉ. मोहिनी शर्मा	हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य	साहित्यसागर, जयपुर, प्र. व. 1986 ।

15.	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव	भारती भंडार,लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 2017 वि.सं.
16.	श्रीमती शारदा अग्रवाल	द्विवेदी युगीन हिंदी उपन्यास	विश्वविदयालय हिंदी प्रकाशन, लखनऊ, प्र. व. 1967 ।
17.	डॉ. चण्डीप्रसाद जोशी	हिंदी उपन्यास : समाजशास्त्रीय विवेचन	अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, प्र. व .1962 ।
18.	डॉ. गणेशन	हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र. व. 1962 ।
19.	किशोरीलाल गोस्वामी	कुसुम कुमारी या स्वर्गीय कुसुम	सुदर्शन प्रेस, वृंदावन, प्र. व. 1889 ।
20.	डॉ. सुधा काळदाते	भारतातील सामाजिक समस्या	पिंपळापुरे एण्ड कं. पब्लिशर्स, नागपुर, प्र. व. 1991 ।
21.	डॉ. स्वर्णकांता तलवार	हिंदी उपन्यास और नारी समस्याएँ	जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. व 1992 ।
22	ऋषभचरण जैन	चम्पाकली	ऋषभचरण जैन एवं सन्तति, नई दिल्ली, प्र. व. 1984 ।

पत्र - पत्रिकाएँ -

1- धर्मयुग - 13 मई, 1984 पृ. क्र. 38।

2- हंस - राजेंद्र यादव, अगस्त 2002 पृ. क्र. 44।

891.433
LAM
T15502